

HINDI**(Compulsory)****Vision IAS****Time Allowed : Three Hours****Maximum Marks : 300****INSTRUCTIONS****Candidates should attempt ALL questions.****The number of marks carried by each question is indicated at the end of the question.****Answers must be written in Hindi
(Devanagari Script) unless otherwise directed.****In the case of Question No. 3, marks will
be deducted if the précis is much longer
or shorter than the prescribed length.**

1. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए : 100
- (i) भारतीय सशस्त्र सेनाओं में अधिकारियों की कमी ।
 - (ii) मनोरंजन के साधन के रूप में क्रिकेट ।
 - (iii) भारत में कारोबार-प्रबंधन संस्थानों की संवृद्धि ।
 - (iv) राष्ट्रीय सुरक्षा पर आप्रवासन का प्रभाव ।
 - (v) शिक्षा द्वारा महिलाओं का सशक्तीकरण ।

2. निम्नलिखित गद्यांश को सावधानी से पढ़िए तथा गद्यांश के अन्त में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 5×12=60

लोग जिन प्रकारों की भंगिमाओं अथवा हाव-भाव का प्रयोग करते हैं, उनका सम्बन्ध अन्य मनोवैज्ञानिक कारकों से जोड़ा जा सकता है। सामान्यतः व्यक्तित्व का गहन प्रभाव प्रयुक्त भंगिमाओं की संख्या और उनकी क्रिस्मों पर पड़ता है। साथ ही, हम इन भंगिमाओं का व्यक्ति के व्यक्तित्व के प्रकार का आकलन करने में भी इस्तेमाल करते हैं।

एक शोधकार्य के अनुसार ऐसी अधिकांश महिलाएँ, जो अपने घुटनों और पाँवों को जोड़कर अपनी टाँगों को आगे फैलाकर बैठती हैं, उनका व्यक्तित्व सफ़ाई-पसंद, कार्य में व्यवस्था-प्रिय, योजनाएँ बनाने में रुचि रखने वाला, बदलाव और अनिश्चितता में अरुचि रखने वाला तथा अपने जीवन को कड़ी समय-सारणी के अनुसार व्यवस्थित करने की तरजीह से जुड़ा हुआ होता है। इस तरह के एक अन्य शोधकार्य से यह पता चलता है कि सत्तावादी व्यक्तियों में असत्तावादी व्यक्तियों की तुलना में शारीरिक हाव-भाव का कम इस्तेमाल करने की प्रवृत्ति होती है। पितृ-विहीन बेटियाँ पिताओं वाली बेटियों की अपेक्षा अधिक संवेदनशील मुद्राओं का प्रयोग करती पाई गई हैं। तलाक़शुदा दम्पतियों की बेटियाँ शरीर का आगे की ओर अपेक्षाकृत अधिक झुकाव प्रदर्शित करती हैं। वे अपनी बाँहों और टाँगों को अपेक्षाकृत अधिक खोल कर रखती हैं और उन लड़कियों की तुलना में जिन्होंने अपने पिताओं को पाँच वर्ष की

आयु से पहले ही खो दिया है, तीन गुना से भी ज्यादा अंगचालन या हाव-भाव प्रदर्शित करती हैं।

एक शोधकर्ता ने पता लगाया है कि जब व्यक्ति शारीरिक रूप से अपंग किसी वक्ता को सुन रहे होते हैं तो वे सामान्यतया बहुत कम हाव-भाव प्रकट करते हैं। संभवतः यह इस मनोभावना के कारण होता है कि एक अपंग के प्रति व्यक्ति अपनी प्रतिक्रिया कैसे व्यक्त करे।

जहाँ तक भंगिमाओं में स्त्री-पुरुष अन्तरों का सम्बन्ध है, यह पाया गया है कि स्त्रियों के मुकाबले पुरुष अपनी बैठने की मुद्रा अधिक बदलते हैं। यदि दो साक्षात्कार लिए जाएँ तो दूसरे साक्षात्कार में पुरुष छोटी मुद्राएँ प्रदर्शित करते तथा अपने पाँवों को कम बदलते हैं। स्त्रियों के बारे में यह एकदम उलटा है। हो सकता है कि दूसरे साक्षात्कार में पुरुष अधिक सहज अनुभव करते हों जबकि स्त्रियाँ दूसरे साक्षात्कार को पहले साक्षात्कार के मुकाबले में अधिक तनावपूर्ण पाती हैं।

- (अ) भंगिमाएँ हमारे व्यक्तित्व से किस प्रकार से सम्बन्धित हैं ?
- (आ) घुटनों और पाँवों को जोड़कर बैठी स्त्रियों की भंगिमाओं से क्या अर्थ निकाला जा सकता है ?
- (इ) पितृविहीन और तलाक़शुदा दम्पतियों की बेटियाँ किस प्रकार का व्यवहार करती हैं ?
- (ई) शारीरिक रूप से अपंग वक्ता को सुनते हुए लोगों के बारे में लेखक का क्या कहना है ?
- (उ) पुरुषों और स्त्रियों द्वारा की जाने वाली भंगिमाओं में क्या-क्या अंतर हैं ?

आयु से पहले ही खो दिया है, तीन गुना से भी ज्यादा अंगचालन या हाव-भाव प्रदर्शित करती हैं।

एक शोधकर्ता ने पता लगाया है कि जब व्यक्ति शारीरिक रूप से अपंग किसी वक्ता को सुन रहे होते हैं तो वे सामान्यतया बहुत कम हाव-भाव प्रकट करते हैं। संभवतः यह इस मनोभावना के कारण होता है कि एक अपंग व्यक्ति व्यक्ति अपनी प्रतिक्रिया कैसे व्यक्त करे।

जहाँ तक भंगिमाओं में स्त्री-पुरुष अन्तरों का सम्बन्ध है, यह पाया गया है कि स्त्रियों के मुकाबले पुरुष अपनी बैठने की मुद्रा अधिक बदलते हैं। यदि दो साक्षात्कार लिए जाएँ तो दूसरे साक्षात्कार में पुरुष छोटी मुद्राएँ प्रदर्शित करते तथा अपने पाँवों को कम बदलते हैं। स्त्रियों के बारे में यह एकदम उलटा है। हो सकता है कि दूसरे साक्षात्कार में पुरुष अधिक सहज अनुभव करते हों जबकि स्त्रियाँ दूसरे साक्षात्कार को पहले साक्षात्कार के मुकाबले में अधिक तनावपूर्ण पाती हैं।

(अ) भंगिमाएँ हमारे व्यक्तित्व से किस प्रकार से सम्बन्धित हैं ?

(आ) घुटनों और पाँवों को जोड़कर बैठी स्त्रियों की भंगिमाओं से क्या अर्थ निकाला जा सकता है ?

(इ) पितृविहीन और तलाक़शुदा दम्पतियों की बेटियाँ किस प्रकार का व्यवहार करती हैं ?

(ई) शारीरिक रूप से अपंग वक्ता को सुनते हुए लोगों के बारे में लेखक का क्या कहना है ?

(उ) पुरुषों और स्त्रियों द्वारा की जाने वाली भंगिमाओं में

3. निम्नलिखित गद्यांश का संक्षेपण मूल गद्यांश की शब्द-संख्या की एक-तिहाई में प्रस्तुत करें। शीर्षक सुझाना अनिवार्य नहीं है। शब्द-सीमा के अन्तर्गत संक्षेपण न करने पर अंक काट लिए जाएंगे। संक्षेपण अलग से निर्धारित काराजों पर ही लिखें व उन्हें अच्छी तरह से उत्तर-पुस्तिका के साथ बाँध लें : 60

यद्यपि आधुनिक शैक्षणिक पद्धति उन्नीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण में मुख्य रूप से पश्चिमी समाजों में पहले स्थापित हुई थी, तथापि उसे एक समग्र राष्ट्रीय-पद्धति के रूप में स्वीकार करने में बर्तानिया अनिच्छुक ही रहा। 1800 के दशक के मध्य तक हालैंड, स्विट्जरलैंड और जर्मन राज्यों ने प्रारम्भिक विद्यालयों में कमोबेश सर्वव्यापी प्रवेश का लक्ष्य प्राप्त कर लिया था, किन्तु इंग्लैंड और वेल्स इस लक्ष्य को पाने में बहुत पीछे रहे। हाँ, स्काटलैंड में शिक्षा कुछ अधिक विकसित थी।

1870 (जब बर्तानिया में अनिवार्य शिक्षा को पहली बार लागू किया गया) और द्वितीय विश्व युद्ध के बीच यथाक्रम सभी सरकारों ने शिक्षा पर किए जाने वाले खर्चों को बढ़ाया। स्कूल छोड़ने की उम्र दस से चौदह वर्ष तक बढ़ा दी गई और अधिक से अधिक स्कूल भी खोले गए किन्तु शिक्षा को राजकीय प्रश्रय का विषय स्वीकार नहीं किया गया। ज्यादातर स्कूल निजी या चर्च के अधिकारियों द्वारा स्थानीय सरकारी मंडलों की निगरानी में चलाये जाते रहे। दूसरे विश्व युद्ध ने इस प्रवृत्ति को बदल डाला। सशस्त्र सेनाओं में भर्ती के लिए प्रवेशकों की योग्यता और अधिगम के परीक्षण दिए गए। परीक्षा-परिष्कारों ने प्राधिकारियों को प्रवेशकों के निम्नस्तरीय शैक्षणिक कौशलों ने

हैरानी में डाल दिया। युद्धोत्तर वर्षों में पुनर्हत्यान के बारे में चिंतित सरकार ने विद्यमान शैक्षणिक पद्धति पर पुनर्विचार करना आरम्भ किया।

1944 से पहले अधिकतर बर्तानवी बच्चे चौदह वर्षों तक एक ही निःशुल्क स्कूल, जिसे प्राथमिक स्कूल कहा जाता था, में विद्याध्ययन करते थे। प्राथमिक विद्यालयों के साथ-साथ माध्यमिक विद्यालय भी चलते थे परन्तु उनमें अभिभावकों को फ़ीस देनी पड़ती थी। इस पद्धति ने स्पष्टतया बच्चों को दो सामाजिक वर्गों में बाँट दिया था तथा गरीब गृहभूमियों से आने वाले लगभग सभी बच्चे प्राथमिक विद्यालयों तक ही सीमित रह जाते थे। जनसंख्या का दो-प्रतिशत से भी कम विश्वविद्यालय में प्रवेश करता था। 1944 के शिक्षा अधिनियम ने अनेक नए परिवर्तनों की पहल की। सब के लिए निःशुल्क माध्यमिक शिक्षा, स्कूल छोड़ने की उम्र को पंद्रह वर्ष तक बढ़ाना तथा शिक्षा में समान अवसरों की प्रतिबद्धता। शिक्षा चुनी गई स्थानीय सरकारों के लिए एक मुख्य ज़िम्मेदारी बन गई।

1944 के शिक्षा अधिनियम के फलस्वरूप अधिकांश स्थानीय शिक्षा अधिकारियों ने बच्चों के शैक्षिक चयन को उनकी माध्यमिक शिक्षा की आवश्यकताओं को पूरा करने का आधार अपनाया। ग्यारह वर्ष की आयु में चयन की यह प्रक्रिया, जब बच्चा प्राथमिक स्कूल से माध्यमिक स्कूल की ओर जाने के लिए उन्मुख होता है, एक तरह से योग्य बच्चों को उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि पर ध्यान दिए बिना चयन की प्रक्रिया थी। अधिकांश

शिक्षार्थियों के लिए 'ग्यारह-जमा' परीक्षा-प्रणाली यह निर्धारित करने में सक्षम थी कि क्या वे ग्रामर स्कूल (जो उच्च स्तरीय पाठ्यक्रम पर आधारित थे) पहुँचेंगे या कि माध्यमिक आधुनिक स्कूलों में (जिनमें सामान्य और रोजगारोन्मुख शिक्षा का मिश्रण उपलब्ध था) पहुँचेंगे। थोड़ी संख्या में कुछ विद्यार्थी तकनीकी स्कूलों या विशेष स्कूलों की ओर भी उन्मुख हुए। जो योग्य थे या जो अपनी शिक्षा आगे जारी रखना चाहते थे, ऐसे बच्चों के पास अपने स्कूलों में सत्रह वर्ष की आयु तक ठहरने का विकल्प भी दिया गया।

1960 तक आंशिक रूप से समाजशास्त्रीय अनुसंधानों से यह स्पष्ट हो गया था कि ग्यारह-जमा की शिक्षण-पद्धति के परिणाम आशानुरूप नहीं हुए हैं। 1959 की क्राउथर रिपोर्ट में यह दर्शाया गया था कि केवल 12 प्रतिशत शिक्षार्थियों ने सत्रह वर्ष तक शिक्षा जारी रखी और जल्दी स्कूल छोड़ने का कारण अकादमिक निष्पादन के बजाय मुख्यतया वर्ग पृष्ठभूमि से जुड़ा हुआ था। लेबर पार्टी की सरकार, जो 1964 में सत्ता में आई, सर्वसमावेशी स्कूलों की स्थापना और ग्रामर तथा माध्यमिक स्कूलों से उपजने वाले भेदों के उन्मूलन तथा ग्यारह-जमा परीक्षाओं के खात्मे के लिए प्रतिबद्ध रही, ताकि ऐसे विद्यालय अनेक वर्गों की पृष्ठभूमियों वाले शिक्षार्थियों को एक-साथ शिक्षा दे सकें। यद्यपि यह भ्रम बराबर बना रहा कि इन नए सर्वसमावेशी स्कूलों को किस तरह की शिक्षा देनी

नए ढंग की शिक्षा ? इस समस्या का कोई निदान नहीं ढूँढा जा सका और भिन्न-भिन्न स्कूलों और क्षेत्रों ने अपने-अपने ढंग की शिक्षण-पद्धतियों का विकास किया । कुछ स्थानीय निकायों ने इस परिवर्तन का प्रतिरोध भी किया और कुछ क्षेत्रों में अभी भी ग्रामर स्कूल अस्तित्व में हैं ।

4. निम्नलिखित अंग्रेजी गद्यांश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए : 20

Last January, I was fortunate enough to go to Brazil on a fishing trip. As we were boarding the vessel that would be our home for the next six nights, I looked up and saw a huge bunch of ripe bananas hanging from a hook.

I was horrified. For more than 20 years, I have been told again and again that bananas and boats just don't mix. I started talking about it with my fishing companions. Not one had ever heard of such a superstition.

Yet just a few months earlier, I had read a paper about the banana superstition. The author was unable to find its origin. One bit of speculation is that dangerous critters lurked inside the banana bunches. But there's no doubt that anglers throughout the world believe that bananas don't mix with fishing boats.

The bananas certainly didn't affect the fishing in Brazil. They were downright tasty and the fishing was

outstanding. But it got me thinking about other superstitions regarding fishing.

For example, lucky hats. I had a lucky hat for a long time, a bright red cap that I was convinced was lucky. I caught a lot of fish and a lot of big fish wearing that hat. Then one day while angry, I threw it overboard. I'm convinced I haven't caught as many fish since.

5. निम्नलिखित हिन्दी गद्यांश का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए : 20

बहुत बरस पहले दक्षिणी इंग्लैण्ड के वेसैक्स में एक लड़का रहता था जिसका नाम ह्यूबर्ट था। वह एक बहादुर और खुश-मिजाज लड़का था और वह लगभग चौदह बरस का था। एक दिन उसके पिता ने उसे धन उगाही के लिए घर से कई मील दूर एक कस्बे में भेजा। उसने घोड़े पर यात्रा की और देर साँझ तक अपना काम पूरा करने के बाद सुनसान और घने जंगल की एक मोर घाटी के बीच से घर लौटने लगा।

वो बजे होंगे जब अपने सिर के ऊपर लटकते पेड़ों के बीच अपने मजबूत टाँगों वाले घोड़े जैरी पर बैठे ह्यूबर्ट को लगा कि उसने घनी शाखों के बीच कुछ आवाज़ें सुनी हैं। उसे याद आया कि यह जगह डाकुओं और लुटेरों के कारण कुख्यात है। "मुझे क्या परवाह?" वह खुद को सांत्वना देते हुए जोर से बोला, "जैरी की टाँगें इतनी चुस्त हैं कि मुझे कोई भी पकड़ नहीं सकता।"

“ह-ह-ह ! ज़रूर !!” एक जोर की आवाज़ हुई और अगले ही पल एक आदमी उसकी दायाँ ओर से सघन जंगल से आ लपका । दूसरा आदमी बायीं तरफ से और तीसरा पीछे एक पेड़ के पीछे से । ह्यूबर्ट को उसके घोड़े से खींचा गया, उसका रुपयों-भरा थैला छीन लिया गया । हालाँकि उसने अपनी भरपूर ताकत लगाई पर उसे क़ाबू कर ही लिया गया । रस्सियों से उसके हाथ-पाँव कसकर बाँधे गए और उसे एक खाई में फेंक दिया गया । फिर वे लोग बेचारे जैसी पर सवार हुए और निकल भागे ।

6. (क) निम्नलिखित मुहावरों और लोकोत्तियों में से केवल **पाँच** का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

5×4=20

- (i) दिल बैठ जाना
- (ii) बलि बनाना
- (iii) चकमा देना
- (iv) धूल में मिलना
- (v) छोटे मुँह बड़ी बात
- (vi) मुँह मोड़ना
- (vii) पार न पाना
- (viii) आँख फड़कना
- (ix) दबे पैर

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं पाँच वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए :

5×2=10

- (i) (चलता)गाड़ी के आगे जाना ठीक नहीं।
- (ii) मैं चावल-दाल खा कर(मूटा) हो गया।
- (iii) मां ने आशीर्वाद दिया।
- (iv) (मेरे)बड़े बहन ने राखी भेजी।
- (v) हल चलाते समय बैल की हड्डी टूटा।
- (vi) समाज व्यक्तियों से (बनती) है।
- (vii) वह (अधिक) पैसे माँगता है।
- (viii) भारत एक (स्वतंत्र) राष्ट्र है।
- (ix) बच्चों को (नैतिक) शिक्षा दी जाय।
- (x) (विश्व)व्यापार में हमें आगे आना है।

(ग) निम्नलिखित युग्मों में से किन्हीं पाँच को वाक्यों में इस तरह प्रयुक्त कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए और उनके बीच का अन्तर भी समझ में आ जाए :

5×2=10

- (i) अस्मत - अस्मिता
- (ii) चिर - चीर
- (iii) बहार - बाहर
- (iv) दिया - दीया
- (v) सड़क - सरक

✓(vii) अनुभूति - अनुमति

(viii) विलग - विकल

✓(ix) प्रमाण - परिणाम

✓(x) अंक - अंग

www.examrace.com